SJIF Impact Factor - 5.54

E- ISSN 2582-5429

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research

April 2022 Special Issue 05 Volume I

हिंदी साहित्य : विमर्श के विविध आयाम

* अतिथि संपादक *

डॉ. अनंत केदारे
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग

डॉ. भाऊसाहेब नवले
उपप्राचार्य एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग

लोकनेते डॉ.बाबासाहेब विखे पाटील (पद्मभूषण उपाधि से सन्मानित)
प्रवरा ग्रामीण शिक्षण संस्था का कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, सात्रल, अहमदनगर (महाराष्ट्र)

Chief Editor : Dr. Girish S. Koli, AMRJ
For Details Visit To - www.aimrj.com

Akshara Publication

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April 2022 Special Issue 05 Volume I (A) SJIF Impact- 5.54

Index

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Pg.No
1	समकालीन अस्मितामूलक विमर्श (आदिवासी विमर्श के विशेष संदर्भ में)	प्रा. डॉ. भरत शेणकर	05
2	21 वीं सदी की हिंदी कविता : आदिवासी संवेदना	डॉ. भाऊसाहेब नवनाथ नवले	09
3	समकालीन हिन्दी कविता में आदिवासी विमर्श	डॉ. सुरेन्द्र शर्मा	12
4	हिंदी साहित्य में आदिवासी नारी विमर्श	प्रा. वडगे वृषाली रंगनाथ	15
5	दक्षिणी राजस्थान में आदिवासी जन आन्दोलन और महिलाएं: एक विमर्श	मदन लाल सुथार	18
6	उत्तराखंड का दलित विरोधी लुप्त लोकोत्सव : बेडवार्त	डॉ.संजीब सिंह नेगी	22
7	आदिवासी अस्मिता एवं अस्तित्व: एक विमर्श	श्री.राजेंद्र वसंतराव जाधव डॉ. भाऊसाहेब नवले	27
8	हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श	सौ.मनिषा कल्याण तावरे	31
9	हिंदी कथा- साहित्य में दलित विमर्श	वैशाली काशिनाथ गायकवाड	33
10	'जब मैं स्त्री हूँ' में स्त्री विमर्श के नए स्वर'	डॉ. अनंत केदारे	36
11	'कोठा नं. 64' में वेश्या जीवन और संघर्ष	डॉ.पंडित बन्ने	42
12	दलित कविता में आस्मिता मूलक विमर्श	डॉ. मंगल कोंडिबा ससाणे	44
13	हिंदी नाटक और स्त्री विमर्श	डॉ. सौदागर सालुंके	48
14	जैनेंद्रकुमार की कहानियों में नारी विमर्श एवं समस्याएँ	प्रा. डॉ. राजेंद्र काशिनाथ बाविस्कर	50
15	'दुक्खम सुक्खम' उपन्यास में स्त्री समस्याओं का यथार्थ	पूनम वर्मा	54
16	गौरी देशपांडे के कहानियों में चित्रित पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित एवं अकेलेपन से पीड़ित स्त्री	प्रा. नामदेव ज्ञानदेव शितोळे	57
17	`बसंती` उपन्यास में स्त्री विमर्श	अनीता कुमारी	60
18	यशपाल के 'मनुष्य के रूप' उपन्यास में नारी विमर्श	डॉ. नारायण बागुल	66
19	मालती जोशी का कथा साहित्य : स्त्री विशेष के संदर्भ में	प्रा.सौ. रेशमा गणेश लोंढे	68
20	हिंदी साहित्य में मानवतावाद के परिप्रेक्ष्य में स्त्री संवेदनाएं	डॉ. चंदा सोनकर	70
21	नासिरा शर्मा के 'अजनबी जजीरा' उपन्यास में व्यक्त नारी विमर्श	योजना रामकिशन नाकाडे डॉ. रमेश शिंदे	73
22	जयप्रकाश कर्दम के उपन्यासों में नारी विमर्श ('करुणा' उपन्यास के विशेष संदर्भ में)	डॉ. संदिप दामू तपासे	75
23	महानगरीय कथा साहित्य में नारी विमर्श	डॉ. पवार सीताबाई नामदेव	79
24	'गिरिराज किशोर के उपन्यास साहित्य में नारी विमर्श'	प्रा. नयना मोहन कडाळे	82
25	हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श के विविध आयाम	डॉ. रीतू भटनागर	84
26	उच्चशिक्षित महिलाओं की बदलती स्थितियाँ	डॉ. रिना रमेश सुरडकर	87
27	मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों में स्त्री जीवन: चिंतन और चुनौतियाँ	ईशा वर्मा	89
28	मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा में स्त्री विमर्श के विविध आयाम	प्रा. मीना ठाकूर	91
29	कंजर नारी की त्रासदी का वास्तविक लेखा-जोखा	मिनेश रामनाथ सातपुते डॉ.जितेंद्र पितांबर पाटील	93

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April 2022 Special Issue 05 Volume I (A) SJIF Impact- 5.54

23

महानगरीय कथा साहित्य में नारी विमर्श

डॉ. पवार सीताबाई नामदेव
अध्यक्ष हिंदी विभाग
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय इंदापुर

प्रस्तुत शोध आलेख में कतिपय महानगरीय कथाओं में से स्त्री पात्रों को प्रतिनिधिक रूप में रखकर स्त्री के विविध पहलुओं को स्पर्श कर उनके सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं पारिवारिक दृष्टि से गुणात्मक परिवर्तन का विश्लेषण करते हुए उनके जीवन में उभरकर आये हुए तरह-तरह की समस्याओं का चित्रण यथार्थ महानगरीय नारी में हमें गुणात्मक परिवर्तन होता हुआ दिखाई देता है, जिसमें उसकी एक नवीन मानसिकता और अस्तित्व उभरकर सामने आया है। भारतीय समाज के आर्थिक ,सामाजिक, पारिवारिक बदलाव के परिणाम स्वरुप नारी के विविध रूपों में भी परिवर्तन आया है । उसके बदलते रूप विमर्श निम्नलिखित कारणों के माध्यम से किया जा सकता है –

अ.सामाजिक ब. राजनैतिक क.आर्थिक ई. पारिवारिक

सामाजिक दृष्टि से महानगरीय नारी का गुणात्मक परिवर्तन :-

सामाजिक परिवेश में नारी समाज का एक अविभाज्य घटक है । हर युग में उसका बदलता हुआ रूप समाज के बदलते परिवेश को जिम्मेदार है। सामाजिक तौर पर नारी का गुणात्मक परिवर्तन महानगरीय कहानियों में होता है। डॉ.गणेश दास के मतानुसार- "समाज में संवैधानिक, आर्थिक, शैक्षणिक , नैतिक परिवर्तनों से नारी के समक्ष संबंधों का एक नए क्षितिज खुला । वह समाज में केवल पारिवारिक संबंधों को लेकर प्रतिष्ठित हुई है । सामाजिक क्षेत्र में जिससे यह स्पष्ट हुआ है कि उसका अपना अलग अस्तित्व भी है और महत्व भी है । अब वह पुरुष के साथ वैचारिक एवं भावनात्मक स्तर पर जीवन जीने लगी है । उसे शिक्षा और अर्थ से संबंध क्षेत्रों में पुरुष के साथ रहना पड़ा है"। चार दीवारों में रहनेवाली नारी घर की दहलीज पार कर पुरुषों के कंधे से कंधा लगाकर वह अलग-अलग क्षेत्रों में काम करके अपने व्यक्तित्व की तलाश करते हुए सामाजिक अस्तित्व का निर्माण करने चली । किसी पर निर्भर न रहकर पारिवारिक भूमिका संभालते हुए सामाजिक जीवन में अपनी नई छबी बनाने का प्रयास करती हुई दिखाई देती है । साथ ही वह अपने व्यक्तित्व को तलाशते हुए स्वच्छंद जीवन जीने की अभिलाषा रखती है। सामाजिक के प्रति नारी की सजगता का प्रमाण यह है कि सन 1952 से लेकर आज तक उन्होंने भारतीय संसद में प्रवेश नहीं किया बल्कि संसद में अपनी स्वतंत्र छवि को प्रस्तुत किया। अखिल भारतीय महिला सम्मेलन, भारतीय राष्ट्रीय महिला परिषद, भारतीय राष्ट्रीय महिला आयोग और अंतर्राष्ट्रीय महिला सबलीकरण वर्षा भारत में मनाना आदि इस बात का प्रमाण है कि वह पुरुष की भांति एक अस्तित्व लेकर भारतीय समाज में उभर कर आई है।

महानगरीय नारी के राजनीतिक रूप का चित्रण हमें मन्नू भंडारी की 'हार' इस कथा में दीपा के माध्यम से मिलता है। दीपा राजनीति में भाग लेती है। विवाह पूर्व और विवाह पश्चात वह राजनीति में सक्रिय रहती है और पति के विरोध में चुनाव में खड़ी रहती है। वह अपने पति से कहती है कि- "अभी तक तुम्हारी पार्टी की विरोधानी थी, अब तुम्हारा भी सामना करना पड़ेगा तुम हारो यह नहीं चाहती और तुम जीतो यह तो कभी भी नहीं चाहती.... कल हम लोगों ने बहुत बड़ी सभा का आयोजन किया है। तुम्हारी कसकर धज्जियां बिखरने वाली हूं।" इसके अलावा निर्मल वर्मा के 'डेढ़ इंच ऊपर' इस कथा में पत्नी भी हमें राजनीति जीवन में सक्रिय दिखाई देती है। महानगरीय नारियों का अपना अलग राजनीतिक अस्तित्व दिखाने का प्रयास इन कहानीकारों ने किया है।

मन्नू भंडारी कि ईसा के घर इंसान इस कहानी में एंजिला एक ऐसी महानगरीय नारी का प्रतिनिधित्व कर रही है, जो धर्म के नाम पर चलने वाले नारी शोषण के खिलाफ आवाज उठाती दिखाई देती है। मानसिक संस्कारों और आत्म शुद्धि के नाम पर चर्च के फादर युवतियों से अपनी काम तृप्ति कर उन्हें जिंदा लाश बना देते हैं। एंजिला ऐसे अन्याय के प्रति विद्रोह करती है एक राजनीति नेता की भांति वह नारी स्वतंत्रता के लिए आवाज उठाती है। समाज में होने वाले ऐसे अन्याय के खिलाफ शोषित महिलाओं में जन जागरण कर आत्म रक्षा कर फादर का भंडाफोड़ देती है।

महानगरीय नारी का आर्थिक धरातल पर परिवर्तन:-

राजनीतिक अधिकारों के साथ-साथ नारी को आर्थिक स्वाधीनता भी प्राप्त हुई। वह आत्म निर्भर बनने के साथ समाज के हर क्षेत्रों में कार्य करने लगी। जहां एक और उसमें वयक्तिक अस्तित्व की चेतना ने जन्म लेकर वह स्वावलंबी बनी, वहीं दूसरी और घर

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April 2022 Special Issue 05 Volume I (A) SJIF Impact- 5.54

की दहलीज के बाहर अलग-अलग कार्य क्षेत्रों से उत्पन्न नए संबंधों से और तरह-तरह की समस्याओं से भी उसको जूझना पड़ा। महानगरीय नारियों का आर्थिक दृष्टि स्वावलंबन का प्रतिबिंब हमें कहानियों में दृष्टिगत होता है, उसकी नौकरी पेशा के साथ-साथ घर की जिम्मेदारियां दहलीज के अंदर और बाहर परिवेश ऐसा दुहेरी व्यक्तित्व में आत्मनिर्भरता और स्वावलंबन मन की भावना ने जन्म लिया। जिसके कारण पति-पत्नी के व्यक्तित्व की अलग-अलग पृष्ठभूमि पर लेख परिलक्षित हो कर समस्याओं का अलग स्तर भी निर्माण करती है। जिसका चित्रण हमें महानगरीय कहानियों में मिलता है।

मोहन राकेश की सुहागिनी इस कथा में मनोरमा और काशी दोनों विवाहित और आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी है। मनोरमा स्कूल में हेडमिस्ट्रेस है, उसका पति दूसरी जगह नौकरी करता है इसलिए दोनों के बीच दूरी बनी रहती है। उसके पति की इच्छा है कि अभी बच्चे न हो इसी कारण उसकी गोद सूनी है। वही पति की इच्छा एवं बाहर नौकरी करने के कारण ममत्व भाव से वंचित रहती है। दूसरी ओर काशी आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी रहकर भी पराधीन बनकर रहती है क्योंकि उसका पति शराबी होता है। वह पत्नी और बच्चों का ख्याल नहीं रखता अपितु दूसरी शादी कर पहले पत्नी से भी संबंध बनाए रखता है। वह काशी के पास आकर उससे पैसे ले जाता है और मारपीट भी करता है। आर्थिक स्वावलंबन के कारण पति-पत्नी के संबंधों में बदलाव ज्यादातर महानगरीय कथाओं के प्रमुख विषय बने हुए हैं जिनमें नारी आर्थिक स्वावलंबन पति-पत्नी के रिश्तो की दरार चित्रित की गई है। रवींद्र कालिया की 'चाल' इस कथा की किरण कॉलेज में अध्यापिका है, जो की कहीं तरह के पुरुषों का सामना उसे करना पड़ता है और यही उसकी समस्याओं का कारण बनता है ज्यादातर महानगरीय महिलाएं जो आर्थिक दृष्टि स्वावलंबन है उन्हें पति के संदेहो एवं अविश्वास के कारण परिवार में बने तनाव का संघर्ष करना पड़ता है।

उषा प्रियंवदा की 'दो अंधेरे' की सुमित्रा, 'जिंदगी और गुलाब' के फूल की वृंदा आर्थिक स्वावलंबन के कारण स्वच्छद और स्वतंत्र जीवन की अभिलाषा करती है। सुमित्रा नौकरी करती है और अकेली रहती है। उसका शंकर नामक युवक से प्रेम संबंध है और उससे वह शादी करना चाहती है। इस बात पर वह खुश रहती है कि उसकी शादी उसी के सोच के अनुसार होगी। इस बात पर वह अपने आप पर गर्व अनुभव करती है। अंत में वह शंकर से शादी नहीं कर पाती और आर्थिक दृष्टि से स्वाधीन होने पर भी वह पुरुष के आगे हार जाती है, तो दूसरी तरफ वृंदा आर्थिक दृष्टि स्वाधीन होने के कारण घर में आत्म सम्मान पाती है। पूरे घर की जिम्मेदारियों उठाती है। एक और विवाह इस मृदुला गर्ग की कहानी में कोमल एक शिक्षित नौकरी करने वाली आधुनिक महानगरीय नारी का प्रतिनिधित्व करती है। वह भी महानगरीय विचारों को लेकर चलती है। वह कहती है- मैं व्यवस्थित विवाह में विश्वास नहीं करती वह विवाह नहीं, जबरदस्ती किसी का पल्लू पकड़ लेना होता है। इन कारणों से ऐसा करने की आवश्यकता पड़ सकती है-आर्थिक स्वावलंबन की खोज ,शारीरिक भूख। पहले ही कम से कम हमें जरूरत नहीं है और तो दूसरा तो उसके लिए विवाह के बंधन की आवश्यकता नहीं।

राजनीतिक दृष्टि से महानगरी नारी गुणात्मक परिवर्तन:-

डॉ. बी. आर अंबेडकर जी द्वारा प्रदान किए गए संवैधानिक अधिकारों के कारण स्त्रियों को पुरुषों की भांति समानता प्राप्त हुई। उसे राजनीतिक समान अधिकार प्राप्त हुए यह नारी के जीवन में एक नया कदम माना गया है। हर उन्नत देशों में नारी का राजनीतिक जीवन में पदार्पण महानगरी नारी के रूप को एक नया आयाम मिला हुआ दिखाई देता है। राजनीति में भाग लेना, आम पुरुषों की तरह उसमें शामिल होना ,स्वतंत्र रूप में नेता का चुनाव आदि सभी अधिकार दिए गए जो पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर वह आगे बढ़ सकती हैं। मन्नू भंडारी की नशा इस कहानी में आनंदी अपने बेटी के पास पति के लिए बेटे और बहू से छुपकर पैसे कमाती है और उसका व्यवहार खराब होने के बावजूद भी पति के प्रति निष्ठा रखती है। राजेंद्र यादव की 'एक कमजोर लड़की' की कहानी में लोकेश की पत्नी सविता पत्नी और प्रेमिका की भूमिका के द्वंद्व में फंसी दृष्टिगत होती है। वह न तो पति के समक्ष और ना ही प्रेमी के समक्ष अपने द्वंद्व को रख पाती है। वह पति के कहने पर प्रेमी को जहर देती है किंतु जहर देते हुए वह बेहोश हो जाती है क्योंकि पति के प्रति एक और निष्ठा में बनती है तो दूसरी ओर प्रेमी की वजह से जहर पीते उन्हें देख नहीं सकती।

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि महानगरी कहानियों में नारी विमर्श हेतु सामाजिक परिवेश में मिस पाल अपने ढंग से जिंदगी जीना चाह कर भी सामाजिक परिवेश से बाहर नहीं निकल पाती। मिस पाल की भांति शीला भी सामाजिक अंतर्विरोध का शिकार है। राजनीतिक परिवेश में महानगरी नारी का गुणात्मक परिवर्तन एंजिला के माध्यम से प्रस्तुत है।आर्थिक स्वावलंबन के परिणाम स्वरुप नारी की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन हुआ है फिर भी सुमित्रा आर्थिक दृष्टि से स्वाधीन होने के बावजूद भी पराधीन परिलक्षित होती है। नारी आय कमा तो लेती है, मगर उसका इस्तेमाल करने का अधिकार आज भी उसके पास नहीं है। पारिवारिक क्षेत्रों में नारी का रूप जरूर बदल गया है किंतु बदलते रूप के साथ-साथ नारी को तरह-तरह की समस्याओं

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April 2022 Special Issue 05 Volume I (A) SJIF Impact- 5.54

से जूझना पड़ रहा है। भारतीय समाज पितृसत्ता होने के कारण नारी संबंध के धरातल पर आज भी महानगरी नारी किसी न किसी संबंध के लिए पुरुष प्रधान संस्कृति के सामने हतबल दिखाई देती है। महानगरी कथाओं की नारी और यथार्थ में महानगरी नारी दोनों के जीवन में कुछ हद तक अंतर जरूर है, वास्तव में महानगरी नारी स्वतंत्र रूप से स्वच्छंद जीवन की अभिलाषा करते हुए भारतीय समाज पर कोई आंच नहीं आने देती।

संदर्भ :-

१. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में नारी के रूप- गणेश दास
२. मोहन राकेश का कथा साहित्य- डॉ शरदचंद्र
३. एक समर्पित महिला -नरेश मेहता
४. सुहागिनी तथा अन्य कहानियां -शैलेश मटियानी
५. मेरी प्रिय कहानियां-मृदुला गर्ग
६. कहानी स्वरूप और संवेदना -राजेंद्र यादव

□ □ □

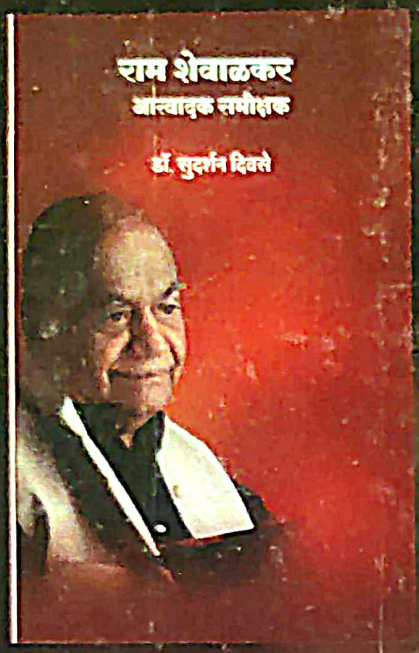

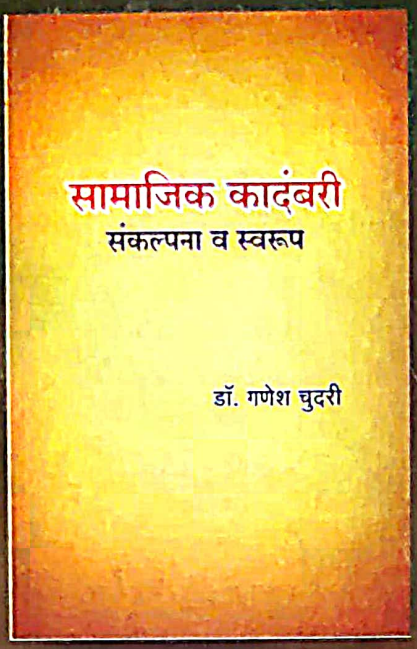

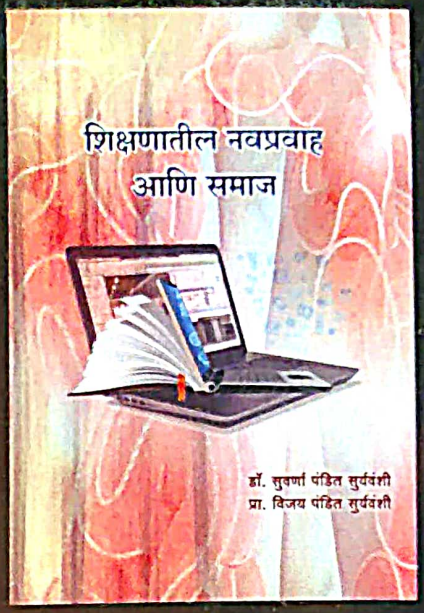

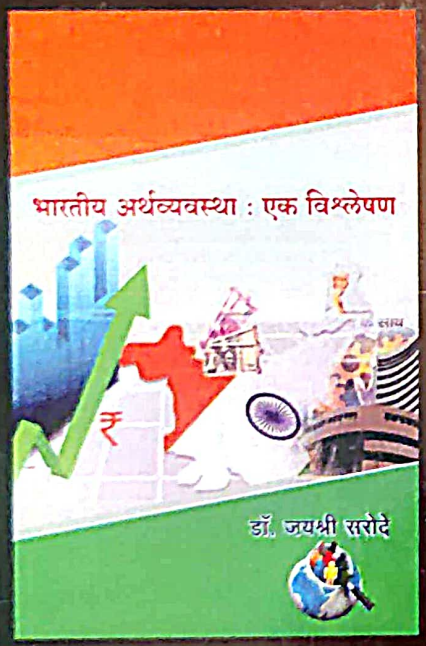

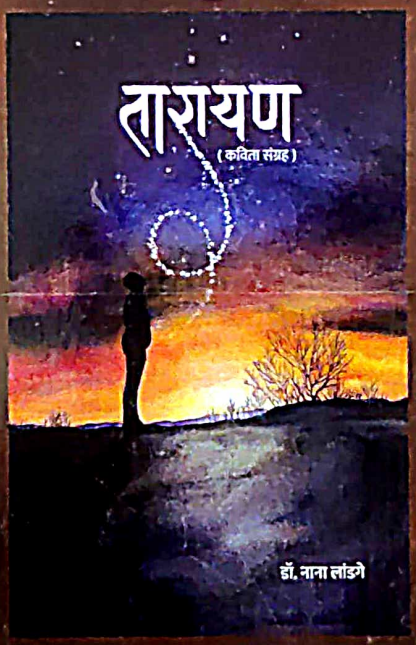

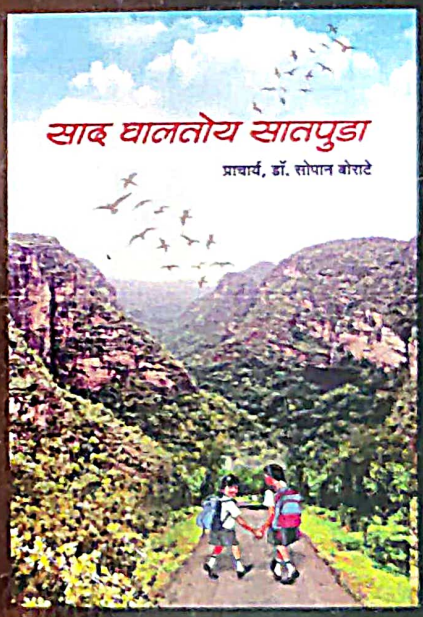

For All Types of Books Publication with ISBN Number Please Contact

AMRJ

AKSHARA PUBLICATION

Plot No.143, Professors Colony, Near Biyani School, Jamner Road,
Bhusawal Dist. Jalgaon. Maharashtra 425 201. Mob. 09421682612

ISSN 2582-5429
9 772582 542001